नईदुनिया

नेपाल : जब जीते हुए उम्मीदवार ने हारे हुए उम्मीदवार के पांव छूकर आशीर्वाद लिया

काठमांडू

जनकपुरधाम संसदीय क्षेत्र से चुनाव परिणाम सामने आने के बाद एक भावुक और लोकतांत्रिक परंपरा को मजबूत करने वाला दृश्य देखने को मिला। चुनाव में पराजित हुए वरिष्ठ नेता विमलेंद्र निधि ने खुद अपने प्रतिद्वंद्वी और विजेता मनीष झा को माला पहनाकर जीत की बधाई दी।

बताया गया है कि परिणाम घोषित होने के बाद निधि ने मनीष झा से मुलाकात की और उन्हें फूलों की माला पहनाकर जीत की शुभकामनाएं दीं। इस दौरान मनीष झा ने सम्मान स्वरूप निधि के पैर छुए और आशीर्वाद लिया। दोनों नेताओं के बीच यह दृश्य काफी भावुक रहा और कुछ समय के लिए माहौल भी भावनात्मक हो गया।

मुलाकात के दौरान विमलेंद्र निधि ने कहा कि जनता का फैसला सर्वोपरि होता है और लोकतंत्र में उसे सम्मान देना सभी नेताओं की जिम्मेदारी है। उन्होंने मनीष झा को जीत की बधाई देते हुए उम्मीद जताई कि वे क्षेत्र के विकास के लिए पूरी ईमानदारी से काम करेंगे।

वहीं मनीष झा ने भी विनम्रता दिखाते हुए विमलेंद्र निधि को अपना अभिभावक तुल्य बताया। उन्होंने कहा कि निधि लंबे समय से इस क्षेत्र की राजनीति के प्रमुख नेता रहे हैं और उनसे मार्गदर्शन मिलता रहेगा। झा ने कहा, विमलेंद्र निधि जी हमारे वरिष्ठ नेता हैं। उनका आशीर्वाद और अनुभव हमें आगे काम करने में मदद करेगा। विमलेन्द्र निधि नेपाल की राजनीति में बहुत बड़ा नाम है। देश की सबसे पुरानी पार्टी के वो उपाध्यक्ष रह चुके हैं, नेपाल के उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री भी रह चुके हैं। जनकपुरधाम उनकी पारंपरिक सीट रही है जहां से वो कई बार चुनाव जीत चुके हैं। लेकिन इस बार बालेन्द्र शाह की लहर में उनको युवा नेता मनीष झा से मात खानी पड़ी। झा को इस बार जहां 43,988 वोट मिले वहीं निधि को सिर्फ 16,652 वोट मिल पाया। इतने बड़े अंतर से हारने के बावजूद निधि ने मनीष झा से मुलाकात कर उन्हें न सिर्फ बधाई दी बल्कि आशीर्वाद भी दिया। दोनों नेताओं की इस मुलाकात ने समर्थकों के बीच भी सकारात्मक संदेश दिया। चुनावी प्रतिस्पर्धा के बावजूद आपसी सम्मान और लोकतांत्रिक मर्यादा का यह उदाहरण क्षेत्र में चर्चा का विषय बन गया है।

न्यूज ब्रीफ

ईरान की चेतावनी: नेताओं की शहादत का बदला लिए बिना राष्ट्रपति ट्रंप को नहीं छोड़ेंगे

तेहरान। अमेरिका और इजरायल के साथ जारी भीषण सैन्य संघर्ष के बीच ईरान ने बेहद आक्रामक रुख अख्तियार कर लिया है। ईरानी सुप्रीम राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सचिव अली लारीजानी ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को सीधे तौर पर चेतावनी देते हुए कहा है कि ईरान अपने नेताओं और नागरिकों की शहादत को किसी भी कीमत पर माफ नहीं करेगा। एक हालिया साक्षात्कार में लारीजानी ने स्पष्ट किया कि ट्रंप को अपने कृत्यों की भारी कीमत चुकानी होगी और जब तक ईरान अपना बदला पूरा नहीं कर लेता, वह पीछे नहीं हटेगा। लारीजानी ने कड़े शब्दों में कहा कि अमेरिकियों ने ईरानी जनता के दिलों पर गहरा घाव दिया है। उन्होंने ट्रंप को संबोधित करते हुए कहा कि अब अमेरिका को ईरान के प्रति अहंकारी या आक्रामक होने का कोई हक नहीं है। क्षेत्रीय स्थिरता पर बात करते हुए लारीजानी ने पड़ोसी देशों को भी सतर्क रहने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि यदि कोई भी क्षेत्रीय देश अपनी जमीन का इस्तेमाल ईरान के खिलाफ अमेरिकी हमलों के लिए होने देता है, तो ईरान को आत्मरक्षा में उन ठिकानों पर जवाब देने का पूरा अधिकार होगा। उन्होंने पड़ोसी देशों से अपील की कि वे अपनी संप्रभुता का उपयोग अमेरिका को रोकने के लिए करें। लारीजानी ने अमेरिका पर आंतरिक फूट डालने की कोशिशों का भी आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने कुर्दों को ईरान के खिलाफ उकसाने का प्रयास किया, लेकिन वे यह भूल गए कि कुर्द मूल रूप से ईरानी हैं और वे अमेरिका के पिछले धोखों (सीरिया प्रकरण) को नहीं भूले हैं। उन्होंने ट्रंप को नीच व्यक्ति करार देते हुए कहा कि कोई भी सभ्य ईरानी यह स्वीकार नहीं करेगा कि उनके देश के भविष्य के नेतृत्व का फैसला कोई बाहरी व्यक्ति करे। इसके अलावा, लारीजानी ने अमेरिकी सेना द्वारा जारी किए गए आंकड़ों पर भी सवाल उठाए। उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से दावा किया कि अमेरिका अपने सैनिकों की मौत का झूठा आंकड़ा पेश कर रहा है, जबकि हकीकत यह है कि कई अमेरिकी सैनिकों को बंदी बना लिया गया है।

ट्रंप का बड़ा एक्शन! एआई कंपनी एंथ्रोपिक को खतरा बताकर लगाई रोक

वाशिंगटन। हाल ही में गूगल, माइक्रोसाफ्ट और ओपनएआई जैसी कंपनियों ने मिलकर अमेरिकी प्रशासन यानी ट्रंप सरकार से बातचीत की थी कि वह एंथ्रोपिक पर दबाव ना बनाए। इसके बावजूद ट्रंप सरकार ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कंपनी एंथ्रोपिक को सप्लाई चेन रिस्क घोषित किया है। इसका सीधा मतलब ये है कि सरकारी फर्म को एंथ्रापिक एआई चैटबाट के यूज को बंद करना पड़ेगा। पेंटागन ने बताया कि आधिकारिक तौर पर एंथ्रोपिक की लीडरशिप को बताया जा चुका है। अब उनकी कंपनी और उसके प्रोडक्ट्स को तत्काल प्रभाव से सप्लाई चेन जोखिम माना गया है। यह फैसला दिखाता है कि शायद एंथ्रोपिक के साथ आगे होने वाली बातचीत की संभावना लगभग खत्म हो चुकी है। ट्रंप सरकार का फैसला तब सामने आया है, जब करीब एक सप्ताह पहले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने कंपनी पर नेशनल सिक्योरिटी को खतरे में डालने का आरोप लगाया था। ईरान युद्ध से ठीक पहले ट्रंप और हेगसेथ ने कई पेनाल्टी के बारे में बताया था। एंथ्रोपिक के सीईओ डारियो अमोदेई ने कहा था कि कंपनी के एआई प्रोडक्ट्स का यूज अमेरिकियों की सर्विलांस या आटोनोमस हथियार के लिए किया जा सकता है, जबकि वह ऐसा नहीं चाहते हैं।

पाप स्टार शकीरा ने एक बार फिर रच दिया इतिहास

लास एंजिल्स। दुनिया भर में स्टेज परफार्मेंस के लिए मशहूर कोलंबियाई पाप स्टार शकीरा ने एक बार फिर इतिहास रच दिया है। उन्होंने मेक्सिको सिटी के ऐतिहासिक चौक झोकालो पर चार लाख से ज्यादा लोगों के सामने परफार्म कर नया रिकार्ड बना दिया। वीकेंड पर आयोजित इस भव्य कान्सर्ट ने पूरी राजधानी को उत्सव के माहौल में बदल दिया। यह कार्यक्रम पूरी तरह मुफ्त था, जिसके कारण मैक्सिको के अलग-अलग शहरों और राज्यों से हजारों लोग शकीरा की लाइव प्रस्तुति देखने पहुंचे। भारी भीड़ के कारण सिर्फ मुख्य चौक ही नहीं, बल्कि आसपास की सड़कों और इलाकों में भी बड़ी स्क्रीन लगाई गईं, ताकि दूर खड़े लोग भी कान्सर्ट का आनंद ले सकें। आयोजन स्थल पर लोगों की इतनी बड़ी मौजूदगी ने इसे जोकालो में आयोजित अब तक के सबसे बड़े कार्यक्रमों में शामिल कर दिया। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए स्थानीय प्रशासन ने विशेष इंतजाम किए थे। शहर के प्रमुख स्थानों जैसे अलमेडा सेंट्रल और मोनूमेंट टू द रिवोलूशन पर भी बड़ी स्क्रीन और अतिरिक्त व्यवस्थाएं की गई।

युद्ध का असर : सात दिन और युद्ध चला तो हालात होंगे बेकाबू, 16 देशों में आ सकता है भारी संकट

लंदन

मध्य-पूर्व में जारी भीषण युद्ध अब केवल क्षेत्रीय संघर्ष तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि इसने पूरी दुनिया की आर्थिक नींव हिलाने की चेतावनी दे दी है। स्काटलैंड की प्रतिष्ठित शोध संस्था वुड मैकेंजी ने एक सनसनीखेज रिपोर्ट जारी करते हुए आगाह किया है कि यदि ईरान-इजरायल और अमेरिका के बीच जारी यह जंग अगले सात दिनों तक और खिंचती है, तो वैश्विक अर्थव्यवस्था वर्ष 1929 की ग्रेट डिप्रेशन (महामंदी) जैसे भयावह दौर में प्रवेश कर सकती है। संस्था का दावा है कि हार्मुज जलडमरूमध्य में पैदा हुआ गतिरोध 1970 के दशक के ऐतिहासिक तेल संकट से भी कहीं अधिक घातक साबित हो सकता है।

ज्ञात हो कि 28 फरवरी को शुरू हुआ यह संघर्ष शनिवार को अपने आठवें दिन में प्रवेश कर गया है। इस युद्ध में अब तक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 16 देश प्रभावित हो चुके हैं, जिससे करोड़ों लोगों की आजीविका पर संकट खड़ा हो गया है। वुड मैकेंजी के मुख्य अर्थशास्त्री पीटर मार्टिन के अनुसार, वर्तमान में कच्चे तेल की कीमतें 90 डालर प्रति बैरल के आसपास हैं। यदि हार्मुज के रास्ते होने वाली 1.2 से 1.4 करोड़ बैरल तेल की दैनिक आपूर्ति रुकती है, तो कीमतें तत्काल 150 डालर और अंतत: 200 डालर प्रति बैरल के पार जा सकती हैं। तेल की कीमतों में यह उछाल वैश्विक जीडीपी विकास दर को 2 फीसदी से नीचे धकेल देगा, जो आधिकारिक तौर पर दुनिया को एक लंबी मंदी और फिर डिप्रेशन की ओर ले जाएगा।

रिपोर्ट में न केवल तेल बल्कि गैस संकट को लेकर भी गंभीर चिंता जताई गई है। दुनिया की 20 फीसदी एलएनजी (तरल प्राकृतिक गैस) हार्मुज जलडमरूमध्य से गुजरती है। इसकी आपूर्ति बाधित होना 2022 के रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान हुई गैस कटौती से भी अधिक गंभीर होगा, जिससे यूरोप और एशिया में गैस की कीमतें 130 फीसदी तक बढ़ सकती हैं। यह स्थिति ठीक वैसी ही होगी जैसी 1929 में अमेरिका के वाल स्ट्रीट बाजार के धराशायी होने से शुरू हुई थी, जिसके परिणामस्वरूप करोड़ों लोग बेरोजगार हो गए थे और बैंकों के विफल होने से पूरी दुनिया में उत्पादन ठप हो गया था। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह सैन्य टकराव जल्द नहीं थमा, तो बढ़ती मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के कारण आधुनिक इतिहास की सबसे भयंकर आर्थिक गिरावट देखने को मिल सकती है। हिंसा जिस तेजी से मध्य एशिया से यूरोप के छोर तक फैल रही है, उसने निवेशकों और वैश्विक बाजारों के बीच हड़कंप मचा दिया है। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए अर्थशास्त्रियों ने चेतावनी दी है कि हम एक ऐसे अंधेरे आर्थिक युग की दहलीज पर खड़े हैं, जहां से वापसी का रास्ता अत्यंत कठिन और लंबा होगा।

ईरान का दावा—बहरीन स्थित अमेरिकी जुफैर सैन्य अड्डे पर मिसाइल हमला

तेहरान/मनामा

पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच ईरान ने बहरीन में स्थित अमेरिकी सैन्य अड्डे पर मिसाइल हमला करने का दावा किया है। ईरान की सैन्य इकाई इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर (आईआरजीसी) ने कहा कि उसने बहरीन में स्थित जुफैर नेवल बेस को निशाना बनाया।

आईआरजीसी के अनुसार यह कार्रवाई उस कथित हमले के जवाब में की गई, जिसमें जुफैर बेस से ईरान के केशम द्वीप स्थित एक समुद्री जल शोधन संयंत्र पर हमला किया गया था। संगठन ने अपनी वेबसाइट पर जारी बयान में कहा कि सटीक निशाना लगाने वाली ठोस और तरल ईंधन से चलने वाली मिसाइलों से इस अमेरिकी ठिकाने पर हमला किया गया।

हालांकि इस हमले से हुए नुकसान या किसी के हताहत होने की स्वतंत्र पुष्टि अभी तक नहीं हो सकी है। इससे पहले, ईरान के एक सैन्य प्रवक्ता ने चेतावनी दी थी कि यदि अमेरिकी युद्धपोत पर्सियन गल्फ में प्रवेश करते हैं, तो उन्हें निशाना बनाया जा सकता है। यह बयान ऐसे समय में आया है जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने संकेत दिया था कि अमेरिकी नौसेना तेल टैंकरों की सुरक्षा के लिए जहाज तैनात कर सकती है। तेल टैंकरों के लिए यह मार्ग विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि वे अक्सर स्ट्रेट आफ होरमुडज से होकर गुजरते हैं, जो वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति के लिए अहम समुद्री रास्ता माना जाता है। विश्लेषकों का कहना है कि हालिया घटनाक्रम से क्षेत्र में तनाव और बढ़ सकता है तथा खाड़ी क्षेत्र की सुरक्षा स्थिति और जटिल हो सकती है।

अमेरिका रूसी तेल पर लगे कुछ और प्रतिबंधों में दे सकता है ढील

वाशिंगटन। वैश्विक ऊर्जा बाजार में बढ़ती अनिश्चितता के बीच अमेरिका ने रूसी तेल को लेकर बड़ा संकेत दिया है। अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरी स्काट बेसेंट ने कहा है कि दुनिया में तेल की आपूर्ति बनाए रखने के लिए अमेरिका रूसी तेल पर लगे कुछ और प्रतिबंधों में ढील दे सकता है। इससे वैश्विक बाजार में सप्लाई बढ़ाने में मदद मिल सकती है। दरअसल अमेरिका ने भारत को समुद्र में पहले से मौजूद रूसी कच्चे तेल की खेप खरीदने की अनुमति दी है। इसी फैसले के बाद यह संकेत मिला है कि अमेरिका जरूरत पड़ने पर अन्य रूसी तेल पर लगे प्रतिबंध भी हटा सकता है। मीडिया रिपोर्ट में स्काट बेसेंट ने एक इंटरव्यू में कहा कि अमेरिकी ट्रेजरी ने अपने सहयोगी देशों को ध्यान में रखते हुए यह फैसला लिया है। उन्होंने कहा कि भारत को उस रूसी तेल को खरीदने की अनुमति दी गई है जो पहले से समुद्र में मौजूद है और जिसे पहले प्रतिबंधों के कारण खरीदा नहीं जा सका था। उनका कहना है कि इस कदम का उद्देश्य वैश्विक बाजार में तेल की अस्थायी कमी को दूर करना है। अगर दुनिया में तेल की आपूर्ति कम होती है तो कीमतों में तेज उछाल आ सकता है, जिससे कई देशों की अर्थव्यवस्था प्रभावित हो सकती है। बेसेंट के मुताबिक इस समय समुद्र में बड़ी मात्रा में रूसी तेल मौजूद है जिस पर प्रतिबंध लागू हैं। अगर इन पर से प्रतिबंध हटाए जाते हैं तो बाजार में तुरंत अतिरिक्त सप्लाई आ सकती है।

ईरान की लाइफलाइन पर महाप्रहार, तेल डिपो और रिफाइनरियों पर बमबारी से दहल उठा तेहरान

तेहरान

मिडिल-ईस्ट में जारी संघर्ष ने अब तक का सबसे भयावह रूप अख्तियार कर लिया है। शनिवार देर रात अमेरिका और इजरायली वायुसेना ने ईरान की राजधानी तेहरान पर अब तक के सबसे भीषण हवाई हमले किए। इस सैन्य कार्रवाई का मुख्य उद्देश्य ईरान की आर्थिक रीढ़ माने जाने वाले तेल डिपो और ऊर्जा बुनियादी ढांचों को ध्वस्त करना था। हमलों के बाद पूरी राजधानी धमाकों की गूंज से दहल उठी और आकाश में दूर-दूर तक आग की लपटें व धुएं का गुबार देखा गया।

ईरानी सूत्रों के अनुसार, दक्षिण तेहरान और उत्तर-पश्चिमी इलाके में स्थित शहरान तेल डिपो पर कई मिसाइलें दागी गईं। हमले इतने सटीक और विनाशकारी थे कि इनकी आवाज पड़ोसी शहर करज तक सुनी गई। सोशल मीडिया पर साझा की गई तस्वीरों और वीडियो में तेहरान के आसमान में आग के विशाल गोले साफ देखे जा सकते हैं। इजरायली सेना ने इन हमलों की जिम्मेदारी लेते हुए दावा किया है कि उन्होंने उन विशिष्ट ईंधन भंडारण केंद्रों को निशाना बनाया है, जिनका उपयोग ईरानी सशस्त्र बल अपनी सैन्य गतिविधियों के लिए कर रहे थे। इन हमलों की

चपेट में तेहरान के पास स्थित शहर-ए-रे जिले की मुख्य रिफाइनरी और अल्बोर्ज प्रांत के कई महत्वपूर्ण आयल डिपो भी आए हैं। रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि ऊर्जा ठिकानों पर यह सीधा प्रहार ईरान की अर्थव्यवस्था और उसकी युद्ध लड़ने की क्षमता को पंगु बनाने की एक सोची-समझी रणनीति का हिस्सा है। पिछले एक सप्ताह से जारी इस जंग में यह पहली बार है जब ईरान के एनर्जी इंफ्रास्ट्रक्चर को इतने बड़े स्तर पर निशाना बनाया गया है। यह कार्रवाई अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की उस चेतावनी के ठीक बाद हुई है, जिसमें उन्होंने सोशल मीडिया पर कहा था कि आज ईरान पर बहुत बुरा असर पड़ेगा और कई अन्य ईरानी अधिकारी भी उनके निशाने पर होंगे।

कुवैत में ईरान ने की ड्रोन की बौछार, एयरपोर्ट का फ्यूल डिपो आग की लपटों में घिरा

कुवैत सिटी

अमेरिका-इजराइल की ईरान के साथ चल रहे युद्ध के बीच कुवैत पर बड़ा ड्रोन हमला हुआ है। ईरान तेल अवीव के अमेरिका के सहयोगी फारस की खाड़ी देशों पर हमला कर रहा है। कुवैत ने कहा कि ड्रोन से सरकारी इमारत को निशाना बनाया गया। ड्रोन हमले में एयरपोर्ट के फ्यूल डिपो में भयंकर आग लग गई।

कुवैत की सरकारी न्यूज एजेंसी के हवाले से सीएनएन ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि कुवैत में एक सरकारी बिल्डिंग को ड्रोन हमले में निशाना बनाया गया। यहां पब्लिक इंस्टीट्यूशन फार सोशल सिक्योरिटी का हेडक्वार्टर भी है। हमले इस स्थान की सामग्री को नुकसान पहुंचा है। यह बिल्डिंग लगभग 22 मंजिला है और कुवैत सिटी सेंटर के पाश अल सूर डिस्ट्रिक्ट में है। इसके बगल में होटल फार सीजंस है। यहां से शापिंग माल्स कुछ फासले पर हैं।

पब्लिक इंस्टीट्यूशन फार सोशल सिक्योरिटी के कार्यवाहक निदेशक बताया कि

बिल्डिंग के कई गार्ड्स को सुरक्षित निकाल लिया गया और किसी के घायल होने की खबर नहीं है। डेटा सुरक्षित है। इसके अलावा कुवैत इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर दो फ्यूल डिपो पर भी ड्रोन हमला हुआ।उनमें से एक में भयंकर आग लग गई। कुवैत फायर फोर्स ने कहा कि टीम अभी सरकारी बिल्डिंग और फ्यूल डिपो में लगी आग बुझाने का काम कर रही है। कुना का कहना है कि यह हमला ऐसे समय पर हुआ, जब कुवैत का एयर डिफेंस दुश्मन ड्रोन की लहर का सामना कर रहा है।

उल्लेखनीय है कि ईरान ने माफी मांगने के बावजूद फारस की खाड़ी के देशों पर बमबारी की है। इस बीच, लेबनान के स्वास्थ्य मंत्रालय ने पुष्टि की सेंट्रल बेरूत में रमाडा होटल की बिल्डिंग के एक अपार्टमेंट पर इजराइली हमले में कम से कम चार लोग मारे गए और दस अन्य घायल हो गए। हैरानी की बात है कि इजराइल ने हिजबुल्लाह के नियंत्रण वाले दक्षिणी इलाकों के बजाय मध्य बेरूत के बीचों-बीच हमला किया।

इससे पहले फारस की खाड़ी के देशों ने रविवार सुबह हवाई हमलों और इंटरसेप्शन की रिपोर्ट दी है। कुवैती आर्मी ने कहा कि स्थानीय समय पर रविवार को ईरान ने कुवैत इंटरनेशनल एयरपोर्ट के फ्यूल स्टोरेज पर ड्रोन की बौछार कर दी। कुवैती आसमान में ड्रोन को इंटरसेप्ट किया जा रहा है। ड्रोन मलबे से कुछ नागरिक ढांचों को नुकसान हो रहा है।

सऊदी अरब के रक्षा मंत्रालय ने भी कहा है कि उसने ड्रोन हमलों का सामना किया और रविवार सुबह कम से कम 21 ड्रोन को इंटरसेप्ट किया। बहरीन में किंग फहद काज-वे के पार मीना सलमान बंदरगाह पर एक जगह पर आग लग गई है। बहरीन के गृह मंत्रालय ने इसे ईरानी हमला बताया है।

यह हमले ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन के माफी मांगने के बाद हुए हैं। उन्होंने शनिवार को खाड़ी देशों से पिछले हफ्ते इलाके में यूएस बेस पर ड्रोन और मिसाइल हमलों के लिए माफी मांगी थी। पेजेशकियन के कार्यालय ने बाद में साफ किया कि राष्ट्रपति का मतलब था अगर इलाके के देश अमेरिका के ईरान पर हमले में साथ नहीं देते हैं, तो हम उन पर हमला नहीं करेंगे।